"दीवार की किसी खोखल में पीपल का पत्ता उड़ता हुआ
बैठ जाता है और किसी को पता भी नहीं चलता – कहाँ से
हवा आई थी, ईंटों की किस दरार में एक बीज उड़ता हुआ
दुबक आया था, मिट्टी और गारे के भीतर एक हल्की-सी
सिहरन उठी थी – और महीनों बाद – घरवाले देखते हैं,
जहाँ टूटी दीवार थी, वहाँ एक पौधा लहरा रहा है।"

–निर्मल वर्मा

# शिवपूजन सहाय

शिवपूजन सहाय का जन्म 1893 ई० में उनवाँस, बक्सर (बिहार) में हुआ था। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए। असहयोग आंदोलन के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शिवपूजन सहाय अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने 'जागरण', 'हिमालय', 'माधुरी', बालक आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही वे हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'मतवाला' के संपादक मंडल में थे। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तो उन्हीं की कल्पना का साकार रूप है। इन गतिविधियों में अतिशय व्यस्त रहने के कारण उन्हें स्वलेखन का कम अवसर मिलता था। 'देहाती दुनिया' उनका एकमात्र उपन्यास है जो ग्रामीण परिवेश को ठेठ भाषा में उभारता है। इसे आगे चलकर लिखे गए आंचलिक उपन्यासों की पूर्वपीठिका कहा जा सकता है। 'कहानी का प्लॉट' और 'मुंडमाल' जैसी मार्मिक कहानियाँ लिखकर उन्होंने हिंदी कथा साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

'विभूति', 'देहाती दुनिया', 'दो घड़ी', 'वे दिन वे लोग', 'बिम्ब-प्रतिबिम्ब' आदि पुस्तकों के अलावा उनके सैंकड़ों लेख, निबंध आदि समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं संग्रहों में प्रकाशित-संकलित होते रहे हैं। उनकी रचनाओं का संकलन 'शिवपूजन रचनावली' नाम से चार खंडों में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा प्रकाशित है।

इस कहानी में कहानीकार ने समाज में नारी का स्थान निर्धारित करने के क्रम में तिलक-दहेज की निर्मम प्रथा, वृद्ध विवाह आदि की विसंगतियों का मार्मिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है। तिलक-दहेज की क्रूरता की शिकार भगजोगनी एक वृद्ध के गले बाँध दी जाती है। तरुणाई प्राप्त करते-करते वह विधवा हो जाती है और अपने सौतेले बेटे की पत्नी बनने का दुर्भाग्य स्वीकार करती है। यह नारी की नियति है।

# कहानी का प्लॉट

मैं कहानी लेखक नहीं हूँ । कहानी लिखने योग्य प्रतिभा भी मुझमें नहीं है । कहानी लेखक को स्वभावतः कला-मर्मज्ञ होना चाहिए और मैं साधारण कलाविद् भी नहीं हूँ । किन्तु कुशल कहानी लेखकों के लिए एक 'प्लॉट' पा गया हूँ । आशा है, इस 'प्लॉट' पर वे अपनी भड़कीली इमारत खड़ी कर लेंगे ।

मेरे गाँव के पास एक छोटा-सा गाँव है । गाँव का नाम बड़ा गँवारू है, सुनकर आप घिनाएँगे । वहाँ एक बूढ़े मुंशीजी रहते थे—अब वह इस संसार में नहीं हैं । उनका नाम भी विचित्र ही था—"अनमिल आखर अर्थ न जापू" - इसलिए उसे साहित्यिकों के सामने बताने से हिचकता हूँ । खैर, उनके एक पुत्री थी, जो अबतक मौजूद है । उसका नाम – जाने दीजिए, सुनकर क्या कीजिएगा ? मैं बताऊँगा भी नहीं ! हाँ, चूँकि उसके संबंध की बातें बताने में कुछ सहूलियत होगी, इसलिए उसका एक कल्पित नाम रख लेना जरूरी है । मान लीजिए, उसका नाम है 'भगजोगनी' । देहात की घटना है, इसलिए देहाती नाम ही अच्छा होगा । खैर, बढ़िए –

मुंशीजी के बड़े भाई पुलिस दारोगा थे—उस जमाने में जबकि अँगरेजी जाननेवालों की संख्या उतनी ही थी, जितनी आज धर्मशास्त्रों के मर्म जाननेवालों की है ; इसलिए उर्दूदाँ लोग ही ऊँचे-ऊँचे ओहदे पाते थे । दारोगाजी ने आठ-दस पैसे का 'करीमा-खालिकबारी' पढ़कर जितना रुपया कमाया था, उतना आज कॉलेज और अदालत की लाइब्रेरियाँ चाटकर वकील होनेवाले भी नहीं कमाते ।

लेकिन दारोगाजी ने जो कुछ कमाया, अपनी जिंदगी में ही फूँक-ताप डाला । उनके मरने के बाद सिर्फ उनकी एक घोड़ी बची थी जो थी तो महज सात रुपये की ; मगर कान काटती थी तुर्की घोड़ों की – कम्बख्त बारूद की पुड़िया थी ! बड़े-बड़े अँगरेज-अफसर उसपर दाँत गड़ाए रह गए; मगर दारोगाजी ने सबको निबुआ नोन चटा दिया । इसी घोड़ी की बदौलत उनकी तरक्की रुकी रह गई; लेकिन आखिरी दम तक वे अफसरों के घपंले में न आए—न आए । हर तरह से काबिल, मेहनती, ईमानदार, चालाक, दिलेर और मुस्तैद आदमी होते हुए भी वे दारोगा-के-दारोगा ही रह गए - सिर्फ घोड़ी की मुहब्बत से ।

किन्तु घोड़ी ने भी उनकी इस मुहब्बत का अच्छा नतीजा दिखाया – उनके मरने के बाद खूब धूम-धाम से उनका श्राद्ध करा दिया । अगर कहीं घोड़ी को भी बेच खाए होते, तो उनके

ABDIEL PUBLICATIONS ABSOL PATNA

नाम पर एक ब्राह्मण भी नहीं जीमता । एक गोरे अफसर के हाथ खासी रकम पर घोड़ी को ही बेचकर मुंशीजी अपने बड़े भाई से उऋण हुए ।

दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी ने भी खूब घी के दीए जलाए थे । गाँजे में बढ़िया-से-बढ़िया इत्र मलकर पीते थे—चिलम कभी ठंढी नहीं होने पाती थी । एक जून बत्तीस बटेर और चौदह चपातियाँ उड़ा जाते थे ; नथुनी उतारने में तो दारोगाजी के भी बड़े भैया थे—हर साल एक नया जलसा हुआ ही करता था ।

किंतु जब बहिया बह गई, तब चारों ओर उजाड़ नजर आने लगा । दारोगाजी के मरते ही सारी अमीरी घुस गई । चिलम के साथ-साथ चूल्हा-चक्की भी ठंढी हो गई । जो जीभ एक दिन बटेरों का शोरबा सुड़कती थी, वह अब सराह-सराह कर मटर का सत्तू सरपोटने लगी । चुपड़ी चपातियाँ चबानेवाले दाँत अब चंद चने चबाकर दिन गुजारने लगे । लोग साफ कहने लग गए—थानेदारी की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर हैं ।

हर साल नई नथुनी उतारने वाले मुंशीजी को गाँव-जवार के लोग भी अपनी नजरों से उतारने लगे । जो मुंशीजी चुल्लू-के-चुल्लू इत्र लेकर अपनी पोशाक में मला करते थे, उन्हीं के अब अपनी रूखी-सूखी देह में लगाने के लिए चुल्लू-भर कड़वा तेल मिलना भी मुहाल हो गया । शायद किस्मत की फटी चादर का कोई रफूगर नहीं है ।

लेकिन जरा किस्मत की दोहरी मार तो देखिए ! दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी के चार-पाँच लड़के हुए ; पर सब-के-सब सुबह के चिराग हो गए । जब बेचारे की पाँचों उँगलियाँ घी में थीं, तब तो कोई खानेवाला न रहा और जब दोनों टाँगें दरिद्रता के दलदल में आ फँसीं और ऊपर से बुढ़ापा भी कंधे दबाने लगा, तब कोढ़ में खाज की तरह एक लड़की पैदा हो गई ! और तारीफ यह कि मुंशीजी की बदकिस्मती भी दारोगाजी की घोड़ी से कुछ कम स्थावर नहीं थी !

सच पूछिए तो इस तिलक-दहेज के जमाने में लड़की पैदा करना ही बड़ी भारी मूर्खता है । लेकिन युगधर्म की क्या दवा है ? इस युग में अबला ही प्रबला हो रही है । पुरुष-दल को स्त्रीत्व खदेड़े जा रहा है । बेचारे मुंशीजी का क्या दोष ? जब घी और गरम मसाले उड़ाते थे, तब तो हमेशा लड़का ही पैदा करते रहे, मगर अब मटर के सत्तू पर बेचारे कहाँ से लड़का निकाल लाएँ। सचमुच अमीरी की कब्र पर पनपी हुई गरीबी बड़ी ही जहरीली होती है ।

भगजोगनी चूँकि मुंशीजी की गरीबी में पैदा हुई, और जन्मते ही माँ के दूध से वंचित होकर 'टूअर' कहलाने लगी । इसलिए अभागिन तो अजहद थी, इसमें शक नहीं ; पर सुंदरता में वह अँधेरे घर का दीपक थी । आजकल वैसी सुघर लड़की किसी ने कभी कहीं न देखी ।

अभाग्यवश मैंने उसे देखा था । जिस दिन पहले-पहल उसे देखा, वह करीब ग्यारह-बारह वर्ष की थी । पर एक ओर उसकी अनोखी सुघराई और दूसरी ओर उसकी दर्दनाक गरीबी देखकर, सच कहता हूँ, कलेजा काँप गया । यदि कोई भावुक कहानी-लेखक या सहृदय कवि उसे देख

लेता, तो उसकी लेखनी से अनायास करुणा की धारा फूट निकलती । किंतु मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं है कि उसकी गरीबी के भयावने चित्र को मेरे हृदय-पट से उतारकर 'सरोज' के इस कोमल 'दल' पर रख सके । और, सच्ची घटना होने के कारण, केवल प्रभावशाली बनाने के लिए, मुझसे अड़कीली भाषा में लिखते भी नहीं बनता । भाषा में गरीबी को ठीक-ठीक चित्रित करने की शक्ति नहीं होती, भले ही वह राजमहलों की ऐश्वर्य-लीला और विशाल वैभव के वर्णन करने में समर्थ हो !

आह ! बेचारी उस उम्र में भी कमर में सिर्फ एक पतला-सा चिथड़ा लपेटे हुए थी, जो मुश्किल से उसकी लज्जा ढँकने में समर्थ था । उसके सिर के बाल तेल बिना बुरी तरह बिखरकर बड़े डरावने हो गए थे । उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में एक अजीब ढंग की करुण-कातर चितवन थी । दरिद्रता-राक्षसी ने सुन्दरता-सुकुमारी का गला टीप दिया था !

कहते हैं, प्रकृत सुन्दरता के लिए कृत्रिम शृंगार की जरूरत नहीं होती; क्योंकि जंगल में पड़ की छाल और फूल-पत्तियों से सजकर शकुंतला जैसी सुंदरी मालूम होती थी, वैसी दुष्यंत के राजमहल में सोलहो सिंगार करके भी वह कभी न फबी । किन्तु शकुंतला तो चिंता और कष्ट के वायुमंडल में नहीं पली थी । उसके कानों में उदर-दैत्य का कर्कश हाहाकार कभी न गूँजा था । वह शांति और संतोष की गोद में पलकर सयानी हुई थी, और तभी उसके लिए महाकवि की 'शैवाल-जाललिप्त कमलिनी' वाली उपमा उपयुक्त हो सकी । पर 'भगजोगनी' तो गरीबी की चक्की में पिसी हुई थी, भला उसका सौंदर्य कब खिल सकता था ! वह तो दाने-दाने को तरसती रहती थी, एक बित्ता कपड़े के लिए भी मुहताज थी । सिर में लगाने के लिए एक चुल्लू अलसी का तेल भी सपना हो रहा था । महीने के एक दिन भी भर-पेट अन्न के लाले पड़े थे । भला हड्डियों के खंडहर में सौंदर्य-देवता कैसे टिके रहते !

उफ ! उस दिन मुंशीजी जब रो-रोकर अपना दुखड़ा सुनाने लगे, तब कलेजा टूक-टूक हो गया । कहने लगे – "क्या कहूँ बाबू साहब, पिछले दिन जब याद आते हैं, तब गश आ जाता है । यह गरीबी की तीखी मार इस लड़की की वजह से और भी अखरती है । देखिए, इसके सिर के बाल कैसे खुश्क और गोरखधंधारी हो रहे हैं । घर में इसकी माँ होती, तो कम-से-कम इसका सिर तो जूँओं का अड्डा न होता । मेरी आँखों की जोत अब ऐसी मंद पड़ गई कि जूँएँ सूझती नहीं । और, तेल तो एक बूँद भी मयस्सर नहीं । अगर अपने घर में तेल होता, तो दूसरे के घर जाकर भी कंघी-चोटी करा लेती, सिर पर चिड़ियों का घोंसला तो न बनता ? आप तो जानते हैं, यह छोटा-सा गाँव है, कभी साल-छमासे में किसी के घर बच्चा पैदा होता है, तो इसके रूखे-सूखे बालों के नसीब जागते हैं ।

गाँव के लड़के, अपने-अपने घर भर-पेट खाकर जो झोलियों में चबेना लेकर खाते हुए घर से निकलते हैं, तो यह उनकी बाट जोहती रहती है – उनके पीछे-पीछे लगी फिरती है, तो भी

मुश्किल से दिन में एक-दो मुट्ठी चबेना मिल पाता है । खाने-पीने के समय किसी के घर पहुँच जाती है तो इसकी डीठ लग जाने के भय से घरवालियाँ दुरदुराने लगती हैं ! कहाँ तक अपनी मुसीबतों का बयान करूँ, भाई साहब ! किसी की दी हुई मुट्ठी-भर भीख लेने के लिए इसके तन पर फटा आँचल भी तो नहीं है ! इसकी छोटी अँजुलियों में ही जो कुछ अँट जाता है, उसी से किसी तरह पेट की जलन बुझा लेती है ! कभी-कभी एकाध फँका चना-चबेना मेरे लिए भी लेती आती है ; उस समय हृदय दो टूक हो जाता है ।

किसी दिन, दिन-भर घर-घर घूमकर जब शाम को मेरे पास आकर धीमी आवाज से कहती है कि बाबूजी, भूख लगी है – कुछ हो तो खाने को दो ; उस वक्त आपसे ईमानन कहता हूँ, जी चाहता है कि गल-फाँसी लगाकर मर जाऊँ या किसी कुएँ या तालाब में डूब मरूँ । मगर फिर सोचता हूँ कि मेरे सिवा इसकी खोज-खबर लेने वाला इस दुनिया में अब है ही कौन ? आज अगर इसकी माँ भी जिंदा होती, तो कूट-पीसकर इसके लिए मुट्ठी-भर चून जुटाती–किसी कदर इसकी परवरिश कर ही ले जाती; और अगर कहीं आज मेरे बड़े भाई साहब बरकरार होते, तो गुलाब के फूल-सी ऐसी लड़की को हथेली का फूल बनाए रहते । जरूर ही किसी 'रायबहादुर' के घर इसकी शादी करते । मैं भी उनकी अंधाधुंध कमाई पर ऐसी बेफिक्री से दिन गुजारता था कि आगे आनेवाले इन बुरे दिनों की मुतलक खबर न थी । वे भी ऐसे खर्राच थे कि अपने कफन-काठी के लिए भी एक खरमुहरा न छोड़ गए- अपनी जिंदगी में ही एक-एक चप्पा जमीन बेंच खाई – गाँव-भर से ऐसी अदावत बढ़ाई कि आज मेरी इस दुर्गत पर भी कोई रहम करनेवाला नहीं है, उलटे सब लोग तानेजनी के तीर बरसाते हैं । एक दिन वह था कि भाई साहब के पेशाब से चिराग चलता था, और एक दिन यह भी है कि मेरी हड्डियाँ मुफलिसी की आँच से मोमबत्तियों की तरह घुल-घुलकर जल रही हैं ।

इस लड़की के लिए आसपास के सभी जवारी भाइयों के यहाँ मैंने पचासों फेरे लगाए, दाँत दिखाए, हाथ जोड़कर विनती की, पैरों पड़ा–यहाँ तक बेहया होकर कह डाला कि बड़े-बड़े वकीलों, डिप्टियों और जमींदारों की चुनी-चुनाई लड़कियों में मेरी लड़की को खड़ी करके देख लीजिए कि सबसे सुंदर जँचती है या नहीं, अगर इसके जोड़ की एक भी लड़की कहीं निकल जाए तो इससे अपने लड़के की शादी मत कीजिए । किंतु मेरे लाख गिड़गिड़ाने पर भी किसी भाई का दिल न पिघला । कोई यह कहकर टाल देता कि लड़के की माँ ऐसे घराने में शादी करने से इनकार करती है, जिसमें न सास है, न साला और न बारात की खातिरदारी करने की हैसियत । कोई कहता है कि गरीब घर की लड़की चटोर और कंजूस होती है, हमारा खानदान बिगड़ जाएगा । ज्यादातर लोग यही कहते मिले कि हमारे लड़के को इतना तिलक-दहेज मिल रहा है, तो भी हम शादी नहीं कर रहे हैं ; फिर बिना तिलक-दहेज के तो बात भी करना नहीं चाहते । इसी तरह, जितने मुँह उतनी ही बातें सुनने में आईं ।

महज मामूली हैसियतवालों को भी पाँच सौ और एक हजार तिलक-दहेज फरमाते देखकर जी कुढ़ जाता है—गुस्सा चढ़ जाता है ; मगर गरीबी ने तो ऐसा पंख तोड़ दिया है कि तड़फड़ा भी नहीं सकता । सारे हिंदू-समाज के कायदे भी अजीब ढंग के हैं । जो लोग मोल-भाव करके लड़के की बिक्री करते हैं, वे भले आदमी समझे जाते हैं ; और कोई गरीब बेचारा उसी तरह मोल-भाव करके लड़की को बेचता है, तो वह कमीना कहा जाता है ! मैं अगर आज इसे बेचना चाहता तो इतनी काफी रकम ऐंठ सकता था कि कम-से-कम मेरी जिंदगी तो जरूर ही आराम से कट जाती । लेकिन जीते-जी हरगिज एक मक्खी भी न लूँगा । चाहे यह क्वाँरी रहे या सयानी होकर मेरा नाम हँसाए । देखिए न, सयानी तो करीब-करीब हो ही गई है – सिर्फ पेट की मार से उकसने नहीं पाती, बढ़ती रुकी हुई है ! अगर किसी खुशहाल घर में होती, तो अब तक फूटकर सयानी हो जाती – बदन भरने से ही खूबसूरती पर भी रोगन चढ़ता है, और बेटी की बाढ़ बेटे से जल्दी होती भी है ।

अब अधिक क्या कहूँ, बाबू साहब ! अपनी ही करनी का नतीजा भोग रहा हूँ । मोतियाबिंद, गठिया और दम्मा ने निकम्मा कर छोड़ा है, अब मेरे पछतावे के आँसुओं में भी ईश्वर को पिघलाने का दम नहीं है । अगर सच पूछिए, तो इस वक्त सिर्फ एक ही उम्मीद पर जान अँटकी हुई है – एक साहब ने बहुत कुछ कहने-सुनने से इसके साथ शादी करने का वादा किया है । देखना है कि गाँव के खोटे लोग उन्हें भी भड़काते हैं या मेरी झाँझरी नैया को पार लगाने देते हैं । लड़के की उम्र कुछ कड़ी जरूर है – इकतालीस-बयालीस साल की ; मगर अब इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है । छाती पर पत्थर रखकर अपनी इस राजकोकिला को.....।"

इसके बाद मुंशीजी का गला रुँध गया – बहुत बिलखकर रो उठे और भगजोगनी को गोद में बैठाकर फूट-फूटकर रोने लग गए । अनेक प्रयत्न करके भी मैं किसी प्रकार उनको आश्वासन न दे सका । जिसके पीछे हाथ धोकर बाम विधाता पड़ जाता है; उसे तसल्ली देना ठट्ठा नहीं है ।

मुंशीजी की दास्तान सुनने के बाद मैंने अपने कई क्वाँरे मित्रों से अनुरोध किया कि उस अलौकिक रूपवती दरिद्र-कन्या से विवाह करके एक निर्धन भाई का उद्धार और अपने जीवन को सफल करें ; किंतु सबने मेरी बात अनसुनी कर दी । ऐसे-ऐसे लोगों ने भी आनाकानी की, जो समाज-सुधार संबंधी विषयों पर बड़े शान-गुमान से लेखनी चलाते हैं । यहाँ तक कि प्रौढ़ावस्था के रँडुए मित्र भी राजी न हुए ।

आखिर वही महाशय डोला काढ़कर भगजोगनी को अपने घर ले गए और वहीं शादी की ; कुल रस्में पूरी करके मुंशीजी को चिंता के दलदल से उबारा ।

बेचारे मुंशीजी की छाती से पत्थर का बोझ तो उतरा, मगर घर में कोई पानी देनेवाला भी न रह गया । बुढ़ापे की लकड़ी जाती रही, पैर लच गई । साल पूरा होते-होते अचानक टन बोल

गए । गाँववालों ने गले में घड़ा बाँधकर नदी में डुबा दिया ।

भगजोगनी जीती है । आज वह पूर्ण युवती है । उसका शरीर भरा-पूरा और फूला-फला है । उसका सौंदर्य उसके वर्तमान नवयुवक पति का स्वर्गीय धन है । उसका पहला पति इस संसार में नहीं है । दूसरा पति है – उसका सौतेला बेटा !!

◆ ◆ ◆

# अभ्यास

## पाठ के साथ

1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि कहानी लिखने योग्य प्रतिभा भी मुझमें नहीं है जबकि यह कहानी श्रेष्ठ कहानियों में एक है ?
2. लेखक ने भगजोगनी नाम ही क्यों रखा ?
3. मुंशीजी के बड़े भाई क्या थे ?
4. दारोगाजी की तरक्की रुकने की क्या वजह थी ?
5. मुंशीजी अपने बड़े भाई से कैसे उऋण हुए ?
6. 'थानेदार की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर हैं' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
7. 'मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं' –लेखक ऐसा क्यों कहता है ?
8. भगजोगनी का सौंदर्य क्यों नहीं खिल सका ?
9. मुंशीजी गल-फाँसी लगाकर क्यों मरना चाहते थे ?
10. भगजोगनी का दूसरा वर्तमान नवयुवक पति उसका ही सौतेला बेटा है –यह घटना समाज की किस बुराई की ओर संकेत करती है और क्यों ?
11. इस कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें ।
12. आशय स्पष्ट करें –

    (क) 'जो जीभ एक दिन बटेरों का शोरबा सुड़कती थी, अब वह सराह-सराहकर मटर का सत्तू सरपोटने लगी । चुपड़ी चपातियाँ चबानेवाले दाँत अब चंद चने चबाकर दिन गुजारने लगे ।'

    (ख) 'सचमुच अमीरी की कब्र पर पनपी हुई गरीबी बड़ी ही जहरीली होती है ।'

## पाठ के आस-पास

1. शिवपूजन सहाय को आंचलिक कथा साहित्य का जनक माना जाता है । इनकी और रेणु की आंचलिकता में क्या समानता-असमानता पाते हैं । शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
2. लेखक द्वारा कहानी में मुंशीजी के सुख-दुख के दिनों का शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया है । इसी तरह के आस-पास के पात्रों का अपनी भाषा में शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए ।

3. अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर लेखक का उपन्यास 'देहाती दुनिया' पढ़िए ।
4. शिवपूजन सहाय कथाकार और निबंधकार के साथ-साथ एक सफल पत्रकार भी थे – इस संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
5. लेखक ने दारोगाजी के लिए काबिल, मेहनती, ईमानदार, चालाक, दिलेर और मुस्तैद आदि विशेषणों का प्रयोग किया है । इनका प्रयोग करते हुए आप भी किसी ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र दस वाक्यों में प्रस्तुत करें ।
6. प्राकृतिक 'भगजोगनी' (जुगनू) को देखकर उसकी गतिविधियों एवं सौंदर्य पर प्रकाश डालें ।
7. इस पाठ में दुष्यंत और शकुंतला का नाम आया है । आप दुष्यंत और शकुंतला की कथा अपने शिक्षक से जानें ।

## भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें -
   बारूद की पुड़िया होना, निबुआ नोन चटाना, घी के दिए जलाना, सुबह का चिराग होना, पाँचों उँगलियाँ घी में, कोढ़ में खाज होना, कलेजा काँपना, बाट जोहना, दाँत दिखाना, छाती पर पत्थर रखना, टन बोल जाना, कलेजा टूक-टूक हो जाना ।
2. 'बुढ़ापे की लाठी' और 'जितने मुँह उतनी बातें' मुहावरों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें ।
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखें -
   साधारण, अमीरी, कृत्रिम, सुंदर, कर्कश, संतोष
4. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखें –
   घोड़ा, चिड़िया, घर, फूल, तीर
5. भाषा और इमारत शब्दों के वचन बदलें ।

## शब्द निधि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्लॉट | : कथानक | चिथड़ा | : टुकड़ा |
| कलाविद् | : कला का ज्ञाता | टीपना | : दबाना |
| घिनाना | : घृणा करना | मयस्सर | : प्राप्त, उपलब्ध |
| ओहदा | : पद | ईमानन | : ईमान से |
| जीमना | : भोजन करना | परवरिश | : पालन-पोषण |
| उऋण | : ऋणमुक्त | अदावत | : दुश्मनी, बदला |
| जलसा | : आयोजन, उत्सव | गुमान | : घमंड, गर्व |
| शोरबा | : शाक-सब्जी का रस | करीमा-खालिकबारी | : उर्दू के प्राथमिक ज्ञान से संबंधित अमीर खुसरो की एक पुस्तक |
| दूअर | : अनाथ | | |
| अजहद | : असीम, बेहद, अपार | | |
| सुघर | : सुगढ़, सुंदर | | |